'मोहन राकेश की कहानियाँ-एक विश्लेषणात्मक अध्ययन'

-डॉ० अजय कुमार सिंह

सहायक प्राध्यापक,

हिन्दी विभाग,

आर०आर०साह डिग्री

इवनिंग कॉलेज,

रक्सौल-845305

मोहन राकेश की कहानियों के अंतर्जगत् का अन्वेषण अतीव आह्लादकारी है।भावुकता प्रधान इन के आरंभिक कहानियाँ व्यापक प्रभाव उत्पन्न करती है।अंतर्द्वंद्व के चित्रण में इनकी भूमिका सहज स्वीकृत है।कहानीकार के रूप में राकेश का निरंतर विकास हुआ है।मध्यवर्गीय समाज के चित्रण में इन कहानियों के महत्व का प्रतिपादन होता है।बाल मनोविज्ञान परक भी इनकी कहानियाँ हैं।आज की कहानियों में जीवन के आदर्शों का सामंजस्य और यथार्थकता के साथ उसकी परिणति को देखा जा सकता है।रागात्मक अनुभूति की अभिव्यक्ति के क्रम में इनकी सार्थकता की दृष्टि से इनकी महत्ता भी सिद्ध की जाती है।संवेदनशीलता की दृष्टि से इन कहानियों का महात्म्य प्रकट होता है।

सम-सामयिक जीवन दर्शन की प्रस्तुति के निमित्त यथार्थ बोध का परिचय स्वाभाविक ही है।सहज संवेदना की दृष्टि से राकेश की कहानियाँ विवेचित होती हैं।प्रगतिशील आलोचकों ने हिंदी कहानियों में मूल्यगत परिवर्तन को स्वीकार किया है।राकेश की कहानियाँ, क्लाइमैक्स" का बनावटी चित्रण नहीं करती हैं।पात्रों के अंतर्द्वंद्व के चित्रण में संवेदनाओं की सज्जा का सौंदर्य अवलोकन योग्य है।

भारतीय समाज में नगरीकरण की प्रक्रिया में तीव्रता के कारण, सामाजिक और आर्थिक संतुलन बनाए रखना कठिन हो गया है।स्त्री-पुरुष के सनातन संबंध में भी परिवर्तन हो गया है।

स्त्री-स्वातन्त्र्य ने भी हिंदी कहानियों को प्रभावित किया है।राकेश ने अपने समय की ट्रेजडी को अनेक रूपों में उभारा है।विवाह और प्रेम अन्य समस्याओं को भी उभारा गया है।प्रतिनिधि नारियाँ युग-जागरण से अनुप्राणित हैं और क्रांतियों की अपेक्षा रखती हैं।

वैयक्तिकता को उजागर करने की दृष्टि से भी राकेश की कहानियों का महत्व प्रतिपादित होता है।अस्तित्ववाद में व्यक्तिगत सत्ता की रक्षा के प्रति सतर्कता अपनायी जाती है और राकेश की कहानियों में इस अस्तित्ववादी दृष्टि का भी आनयन हुआ है।अंत:संघर्ष की दृष्टि से भी कहानियों का विवेचन होता है।स्वातन्त्र्य और अकेलेपन के द्वंद्व को राकेश की कहानियों में देखा जा सकता है।प्रेम के मूल रूप की व्यंजना भी इन कहानियों में दर्शित है।

राकेश ने अपनी डायरी के पन्नों में अपने आत्म-चिंतन को व्यक्त किया है, जो विचारणीय है।आधुनिकता को एक व्यापक परंपरा के विकास के रूप में व्याख्यापित किया जाता है।वैश्विक एकता की भावना ने इस आधुनिकता को प्रभावित किया है।आधुनिकता द्वंद्व और तनाव की स्थितियों को उत्पन्न करती है।

विज्ञान के द्वारा ध्वंस की सामग्री का भी प्रस्तुतीकरण हुआ है।स्वार्थपरता ने आधुनिकता को अंधकाराच्छ कर दिया है।मध्यवर्गीय जीवन की विचित्रता और उसके विडंबना को राकेश की कहानियों में देखा जा सकता है।आज की कहानियाँ समसामयिक यथार्थ की जटिलता को व्यक्त करती है।बिंबो और प्रतीकों के माध्यम से यथार्थबोध को अतीव दृढ़ किया गया है।

मोहन राकेश की कहानियों में आधुनिकता-बोध के कई आयाम परिलक्षित होते हैं।रचना की प्रासंगिकता को जीवन संदर्भों से संयुक्त कर व्यक्त किया जाता है।तत्काल का वर्तमान क्षण आधुनिकता से संपीड़ित माना जाता है।समसामयिक चेतना से संपन्न राकेश की कहानियाँ व्यापक प्रभाव उत्पन्न करती है।मनुष्यों की ऐकांतिक पीड़ा और अकुलाहट को राकेश के चित्रण में इन कहानियों के वैशिष्ट्य दर्शित होते हैं।भारत विभाजन के घटना ने जीवन के मूल्य-बोध को प्रभावित किया है।औद्योगिकरण ने जीवन-दशा में परिवर्तन किया है।संयुक्त परिवार टूट गया है।नारी शिक्षा के प्रति जागरूकता बढ़ी है।इन विशेषताओं ने राकेश की कथा साधना को प्रभावित किया है।कलागत यथार्थ को कल्पना से संयुक्त कर प्रस्तुत किया जाता है।इतिहास के प्रति राकेश की रोमानी दृष्टि है।चरित्र से जिस चारित्र की सत्ता प्रकट होती है उसमें चिंतन और विचार पक्ष को संयुक्त किया जाता है।चिंतन और कल्पना के द्वारा साहित्य की अट्टालिका निर्मित होती है।मोहन राकेश की पात्र-परिकल्पना अनेक संभावनाओं से युक्त है।यह यथार्थ की भूमि पर आधृत है।मनुष्य में देवत्व के अनुसंधान क्रम में भी इनकी कहानियों की मीमांसा की जाती है।चारित्रों की जीवन धारा की परिणति विवाद के समुद्र में होती है और इसे राकेश की कहानियों में देखा जा सकता है।भीतर के जगत् का अन्वेषण कई आधार पर किया जाता है।अर्थ काम तक ही जीवन को सीमित किया गया है।नारियों की काम और व्यथा कथा की प्रस्तुति इन कहानियों में हुई है।मानवतावाद के उद्घाटन को भी इनमें देखा जा सकता है।अंतर्मुखी यात्रा का प्रारंभ होना भी आधुनिकता की एक देन ही है।

राकेश की कहानियों की कथावस्तु पात्रगत अंतर्द्वंद्व में सिमटी भी दिखलाई पड़ती हैं।जीवन के मुक्त यथार्थ को प्रकट करने में इन कहानियों की सार्थकता सिद्ध होती है।कहानीकार की जीवन-यात्रा की परिणति को ही इनके कथा-साहित्य में देखा जा सकता है।मानवीय संबंधों का बोध आधुनिक युग का साफ्ल्य् माना जाता है और इस बोध को कहानीकार ने चित्रित करने की चेष्टा की है।स्त्री-पुरुष संबंधों को कहानीकार ने अपना प्रिय विषय बनाया है।वर्किंग वीमेन की थीम को लेकर राकेश ने कहानियों की रचना की है।विधवाओं की दीनदशा का चित्रण भी इन्होंने किया है।अर्थाभाव जन्य वैकल्प और विवशता का भी वर्णन उपलब्ध है।मनीषा और चेतना की पारमिता इन कहानियों में प्रतिपादित है।कथावस्तु के विन्यास में अन्य विशेषताएँ अनुस्यूत हो गई है।वस्तुगत द्वंदों को व्यक्तिगत सिद्ध करते हुए, राकेश ने महत्वपूर्ण काम किया है।वैयक्तिकता और सामाजिक मूल्यों के प्रति आस्थावान कहानीकार प्रशंसनीय होता है।मनुष्यता को केंद्रित कर विचारधारा की प्रस्तुति से सफल सिद्ध होता है।यथार्थ और आदर्श के द्वंद्व के आलोक में भी राकेश की कहानियाँ विवेचित होती है।

राकेश की कहानियों में युगबोध की संपूर्ण विशेषताएँ संयुक्त हैं और मानवीय धरातल पर चेतना के उन्मेष को भी देखा जा सकता है।

वैज्ञानिक प्रगति और अर्थतंत्र की गतिशीलता ने कहानियों को प्रभावित किया है । संबंधों का विखण्डन भी विचारणीय है । अर्थ और काम पर आधृत कहानियाँ विवेच्य हैं । संबंधों की जाँच के क्रम में राकेश की कहानियों का मूल्यांकन होता है । व्यक्तिगत अस्मिता के आधार पर जीवन का मुल्यांकन विचार योग्य हो जाता है । स्वार्थपरता के कारण संबंधों की निरर्थकता प्रकट होती है । कहानीकार का मुक्त यथार्थ ही कहानियों में संदेहों को सृष्ट करता है, जो विचारणीय है।

व्यक्तिवादी और समस्टिवादी जीवन दर्शन की आयाम भी कहानियों में देखा जा सकता है । फ्रायड ने जिन दमित वासनाओं के उद्रक की बात की है, उसका प्रत्याख्यान कहानियों में किया जाता है, जो समय सापेक्ष है । काम की शाश्वतता और व्यापकता त्रुटि समर्पित है । इसी को आध्यात्म के साथ संयुक्त किया जाता है । राकेश की कहानियाँ काम की विकृतियों को ही पल्लवित करती है ।

आदर्शवाद और मिथ्यावाद की मिश्रित प्रतिक्रिया को राकेश की कहानियाँ उद्दत करती है । सहसंवेदनशिलता और संप्रेषणीयता की दृष्टि से भी इनकी रचनाएँ प्रशंसित होती हैं । युग - बोध और मानवीय संबंधों की अभिव्यक्ति की क्रम में इन कहानियों का मूल्यांकन सार्थक सिद्ध होता है । कलावाद, कल्पनावाद, मनोविश्लेषणवाद और स्वसत्तावाद की दृष्टि से, राकेश के कथा साहित्य का विवेचन आवश्यक हो जाता है । शहरी जीवन के अंतःसंघर्ष और द्वंद्व के अंकन में राकेश की कहानी कला विवेचित होती है ।

खंडित व्यक्तित्व और खंडित बिम्बों के चित्रण में मोहन राकेश की प्रतिभा की प्रशंसा की जाती है ।

प्रकृति के प्रति कहानीकार का असीम अनुराग प्रकट हुआ है । इन्होंने यत्र - तत्र अपने इस अनुराग को भी प्रकट किया है । राकेश की कहानियों में आधुनिक भाव - बोध की द्वंद्वशीलता परिलक्षित है । रचनाकार का जीवन अनेक परिवेशों में व्यतीत हुआ है । फलतः इनकी कहानियों में परिवेशजन्य वैचित्र्य स्वाभाविक ही है ।

आधुनिक कथा - साहित्य में चरित्र का आंतरिक पक्ष विशेष रूप से उजागर हुआ है और हिंदी साहित्य में कहानी रचना की जो धारा परिलक्षित होती है, इसमें मोहन राकेश की कथा - उर्मियों का भी अवलोकन किया जा सकता है । राकेश ने अपनी रचना धर्मिता के द्वारा आधुनिक परिवेश की समस्त विडंबनाओं को केन्द्रीभूत करने का प्रयास किया है और जीवन - जगत् के कई ज्वलन्त प्रश्नों को भी प्रस्तुत किया, इनका उत्तर एक कठिन कार्य हो जाता है । मोहन राकेश ने अपनी कहानियों के माध्यम से व्यापक सामाजिक सत्य को वाणी देने की चेष्टा की जो सत्य इस युग की साहित्य साधना का आलम्बन है।

-:संदर्भ सूची:-

1. मोहन राकेश का नारी संसार, श्रीमती मीना प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली, 1987.

2. नयी कहानी की भूमिका : कमलेश्वर, 1963 प्रकाशन, बरेली ज्योति प्रकाशन, बरेली 1989.

3. नयी कहानी : संदर्भ और प्रकृति : देवी शंकर अवस्थी, ज्योति प्रकाशन, बरेली, 1989.

4. मोहन राकेश की सम्पूर्ण कहानियाँ : राजभवन, प्रकाशन, 1974.

5. मोहन राकेश की डायरी : अनिता राकेश, राजभवन प्रकाशन, 1983.